कविता

सुधेश

314 सरल अपार्टमैन्ट्स , द्वारिका , सेक्टर 10 ,
नई दिल्ली 110075, मो.9350974120

शताब्दी किस ने देखी है ।

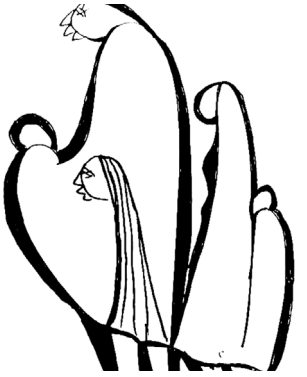

हर दिन शुरु होता है
सुबह की ताज़गी
गुनगुनी धूप से
रोटी के राग के साथ
बीत जाता है
उदास शाम के धुँधलके में।
दिन बदलता है सप्ताह में
जो शुरु होता है
नए संकल्प के साथ
हर काम लेकिन टलता है
अगले सप्ताह के लिए ।
देखते देखते
सप्ताह बदल जाता है महीने में
जो शुरु होता है नए जोश के साथ
ख़त्म होता है
रोज़ कम होने वाले मासिक वेतन सा।
बारह महीनों बाद
आता है नया वर्ष
जो शुरु होता है ढेरों बधाइयों
नई योजनाओं के साथ
जो रह जाती बन पंचवर्षीय योजना
सिर्फ काग़ज़ पर।
वर्षों बाद
शताब्दी किस ने देखी है
बस आदमी रोज़ जीता है
रात को मरता है । ❖

कविता

रविशंकर सिंह

सालडांगा, वरदेही रोड, पोस्ट रानीगंज, जिला–पश्चिम बर्धमान, पं.बंगाल,
713347. मो. 09434390419

मैं लौट आऊँगा

मरकर भी नहीं मरुंगा,
जिन्दा रहूँगा मैं ,
तुम्हारी यादों में।
सूरज की किरणों के संग,
मैं धरा पर उतर आऊँगा,
तुम मुझे फूलों की मुस्कान में देखना।
मैं ओस बनकर,
मोतियों में ढल जाऊंगा,
रातों में।
पत्तियों की सरसराहटों में,
अजाने कदमों की आहटों में,
चिड़ियों की चहचहाटों में,
तुम मुझे सुनना,
मैं प्रकृति के गीत गाऊँगा। ❖